Goddess Matangi Mantra Sadhana Evam Siddhi

भगवती मातंगी मंत्र साधना एवं सिद्धि

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

दशमहाविद्याओं में आपका नवम् स्थान है। मंतग मुनि की पुत्री के रूप में अवतार लेने के कारण इन्हें मातंगी कहा जाता है। एक कथा के अनुसार पूर्वकाल में मंतग मुनि ने सृष्टि के जीवों का वशीकरण करने के लिये कंदब वन मे कठोर तपस्या की थी। तपस्या के प्रभाव से उनके नेत्रों से दिव्य तेजपुंज निकला। उस तेजपुंज ने स्त्री का रूप धारण कर लिया। इन्हीं की प्रसिद्धि मातंगी नाम से हुई। भगवती मातंगी की साधना करने वाला उत्तम पुरुष शास्त्र, वेदवेदांग का ज्ञाता, देवज्ञ, संगीत एवं सर्व विद्याओं से सम्पन्न हो जाता है। इनके मंत्रों से वशीकरण एवं सम्मोहन कार्यों में शीघ्र सफलता मिलती है। मातंगी देवी अपने साधक को गृहस्थ सुख के साथ समस्त भौतिक ऐश्वर्य प्रदान करती है। देवताओं से पूजित यह विद्या किसी भी कन्या के विवाह में उत्पन्न दोषों को समाप्त करती है। इस विद्या के प्रभाव से अन्न-धन की वृद्धि, वाक्सिद्धि एवं परमसौभाग्य की प्राप्ति होती है। श्रीविद्या के अन्तर्गत मातंगीदेवी की परम्परा में श्रीदक्षिणामूर्त्तिशिव ही गुरु के रूप में विराजमान हैं। इनके साथ में स्वगुरु, दिव्यगुरु, सिद्धगुरु तथा सुमानव गुरु की उपासना की जाती है। उच्छिष्ट चांडाली, सुमुखी, लघुश्यामा, कर्णमांतगी,

वश्यमातंगी, चण्डमातंगी, राजमातंगी इत्यादि इनके मुख्य स्वरूप हैं, जिनका वर्णन आगे किया गया है। साधना से पूर्व भगवती का उत्तम सामग्रियों से पूजन करे। अन्य आवश्यक यम नियमों की जानकारी गुरुदीक्षा द्वारा प्राप्त करनी चाहिये।

भगवती मातंगिनी यंत्रावरण मंगल वंदना– भगवती मातंगी की उपासना 'श्रीविद्या' के अन्तर्गत की जाती है। श्रीविद्या की उपासना हेतु सर्वश्रेष्ठ साधन श्रीयंत्र है। श्रीविद्या की अंगमहाविद्या होने के कारण मांतगी देवी का यंत्र दशचक्रात्मक श्रीयंत्र है। इस प्रकार से श्रीयंत्र को मातंगिनीयंत्र भी कहते हैं। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई अन्तर नहीं होता, वैसे ही यंत्र और देवताओं में भी कोई भेद नहीं होता। इसलिये देवता को प्रसन्न करने के लिये विधिवत् यंत्र की पूजा अवश्य करनी चाहिये। यंत्रार्चन में देवता एवं उनके अंग देवताओं, शक्तियों तथा आयुधों आदि की सम्मिलित रूप से पूजार्चना की जाती है। इससे भगवती शीघ्र प्रसन्न होती हैं। भगवती मातंगी के किसी भी मंत्र एवं प्रयोग से पूर्व इस यंत्रावरण वन्दना का नित्य पाठ

करने से अत्यन्त शुभ फल मिलता है। इस मंगलस्तुति से यंत्रार्चन का फल प्राप्त होता है।

प्रथमावरणवंदनम्- परदेवता वंदना- मैं उस परदेवता को नमस्कार करता हं, जिसने श्वेतरक्त वर्णरूपी शिवशक्ति स्वरूपात्मक चक्रता को प्राप्त कर लिया है, जो मूलादि से लेकर बिंदु पर्यन्त सूक्ष्मरूप से परिपूर्ण है, जो हाथों में बाण, धनुष, अंकुश तथा पाश को धारण करके स्थूल रूप से विराजमान है और जिसने श्रीचक्र के रूप में परिणति को प्राप्त कर लिया है।1।

परयंत्रराज वंदना- मैं भूपुर, त्रिवृत्तक, षोडशदल, अष्टदल, चतुर्दशार, बहिर्दशार, अन्तर्दशार, अष्टकोण, त्रिकोण तथा बिंदु के साथ परयंत्रराज की वन्दना करता हूं।2।

भूपुर के बाहर में इन्द्र आदि दश दिक्पाल वंदना- मैं भूपुर के बाहर में स्थित पीतवर्ण वाले तथा हाथ में वज्र को धारण करने वाले इन्द्रदेव, लालवर्ण वाले तथा हाथ में शक्ति को धारण करने वाले अग्निदेव, कृष्णवर्ण वाले तथा हाथ में दण्ड को धारण करने वाले यमदेव, बंधूक पुष्पके समान लालवर्ण वाले तथा हाथ में खड्ग को धारण करने वाले नैऋतदेव, श्वेतवर्ण वाले तथा हाथ में पाश को धारण करने वाले वरुणदेव, हरितवर्ण के शरीर वाले

तथा हाथ में अंकुश को धारण करने वाले वायुदेव, श्वेतवर्ण वाले तथा हाथ में गदा को धारण करने वाले कुबेरदेव, श्वेतवर्ण वाले तथा हाथ में शूल को धारण करने वाले ईशानदेव, पीतवर्ण वाले तथा हाथ में कमल को धारण करने वाले ब्रह्मदेव और रमणीय श्याम वर्णवाले तथा हाथ में चक्र को धारण करने वाले अनन्तदेव- इन सभी दिक्पालों को पूर्व से आरम्भ करके अभिवर्त्त क्रम से भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूं।3।

भूपुर वंदना- मैं श्वेत, रक्त और अत्यन्त कृष्णवर्ण वाली तीन रेखाओं से निर्मित, चार द्वारों से युक्त, रमणीय, तीनों लोकों का सम्मोहक तथा महाप्रकट योगिनियों के समेत भूपुर चक्र को प्रणाम करता हूं।

पश्चिमद्वार में स्थित द्वारपाल सर्वयोगिनीरूपी सर्वभूतों की वंदना- अनेक आयुधों ये युक्त, अनेक वस्त्रों से भूषित, अनेक आकृति वाली इन सभी योगिनियों का और सभी भूत जो कि अनेक आकृति वाले, अत्यन्त भयंकर रूपवाले, अनेक शस्त्रों से चिह्नित हाथ वाले, अनेक मुखों से युक्त भयंकर मुखवाले तथा पश्चिम द्वार पर स्थित हैं, उन सभी प्रसन्न द्वारपालों का मैं स्मरण करता हूं।5।

पूर्वद्वार में स्थित द्वारपाल क्षेत्रपति वंदना– सुरमे के समान कृष्णकान्तिमान, विशाल त्रिनेत्रधारी, षड्भुजाओं में चमकती हुअी तलवार, नरकपाल पात्र, त्रिशूल, डमरू, मुद्रा तथा दण्ड को धारण किये हुए, पूर्व द्वार में स्थित प्रसिद्ध प्रसन्नस्वरूप द्वारपाल क्षेत्रपति का स्मरण करता हूं।6।

दक्षिणद्वार में स्थित द्वारपाल गणनायक वंदना– मैं उस गणनायक को प्रणाम करता हूं, जिनका उदर लम्बा है, शरीर नीला है, हाथी के समान मुख है; जिन्होंने हाथों में पाश, अंकुश, कपाल तथा शूल को धारण किया है और जो दक्षिणी द्वार के द्वारपाल हैं।7।

उत्तर द्वार में स्थित द्वारपाल बटुक भैरव वंदना– मैं बालरूप, विशुद्ध स्फटिक की प्रभा के समान मुखवाले, त्रिशूल तथा दण्ड को धारण करने वाले, त्रिनेत्रधारी, सदैव उत्तर द्वार में स्थित रहने वाले द्वारपाल, देवी के पुत्र श्रीबटुक भैरव को प्रणाम करता हूं।8।

भूपुर के नैऋत्य कोण में स्थित तिरस्करी देवी वंदना– मैं कृष्णवर्ण के मुखवाली, लालवर्ण की तीन आंखवाली, कृष्णवर्ण वस्त्र धारण करने वाली, कृष्णवर्ण घोड़े पर आरुढ़, ऊपर के

दोनों हाथों में गदा और खड्ग तथा नीचे के हाथों में मधुसे भरे हुए घड़े को लिये हुए, अपनी रम्य योनिका का प्रदर्शन करती हुई और पशुवर्ग को विमोहित करती हुई नैऋत्यकोण में स्थित सुन्दर मुखवाली तिरस्करी देवी का मन से स्मरण करता हूं।9।

आग्नेयकोण में स्थित वनदुर्गा वंदना- मैं श्याम अंगवाली, मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने वाली, कर कमलों में शंख, चक्र, तलवार, बाण, तर्जनी मुद्रा, चर्म, खेटक तथा चाप को धारण करने वाली, विहसित मुखवाली, मणिरत्नों से अलंकृत, रक्तवस्त्र को धारण करने वाली, आग्नेयकोण में स्थित वनदुर्गा का मन से स्मरण करता हूं।10।

ईशानकोण में स्थित कामदेव वंदना- मैं एक हाथ में बंधूक पुष्प तथा दूसरे हाथ में पुष्पबाण एवं ईख से बने हुए धनुष को धारण करने वाले, दो हाथ वाले, कुसुम आदि से विभूषित, रति से युक्त, अत्यन्त सुन्दर, ईशानकोण में स्थित कामदेव का स्मरण करता हूं।11।

वायव्यकोण में स्थित वसन्त वंदना- मैं वसन्त को निरंतर प्रणाम करता हूं, जो विहसित मुख से युक्त है, शरत्कालीन चन्द्रमा के

समान गौरवर्ण वाले हैं, प्रीति से युक्त हैं, ऋतुओं का राजा है, रत्नादि से अलंकृत हैं, सुन्दर हैं तथा वायव्यकोण में स्थित है।12।

भूपुर के दोनों पार्श्व में स्थित शंखनिधि तथा पद्मनिधि वंदना– मैं उन शंखनिधि तथा पद्मनिधि का स्मरण करता हूं, जिनकी पद्ममाला से चिह्नित दिव्यदेह है; विहसित मुखकमल, हाथों में वर मुद्रा तथा अभयमुद्रा सुशोभित है; जो भूपुर के दोनों पार्श्व में स्थित है तथा सुन्दर और प्रसन्नस्वरूप हैं।13।

पश्चिमद्वार में स्थित द्वारनायिका कुब्जकेशी वंदना– मैं देवी कुब्जकेशी को प्रणाम करता हूं, जिसने मस्तक पर अर्द्धचन्द्र को धारण किया है, जिसके मुख में दर्प के कारण प्रसन्नता छाई हुई है, जो बिखरे हुए बालों वाली, उगते हुए सूर्य के समान कांतिवाली, स्तनों के भार से झुकी हुई, सभी अलंकरणों से सुन्दर लगने वाली, सिंह के कंधे पर बैठी हुई, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा को धारण करने वाली, एक मुखवाली, तीन आंखों वाली, पश्चिम द्वार की नायिका हैं तथा शक्ति समूह से वंदित हैं।14।

उत्तरद्वार में स्थित द्वारनायिका सिद्धलक्ष्मी वंदना– मैं खाट के पाया, त्रिशूल, अभयमुद्रा, वरमुद्रा, नरमुण्ड, पाश, कुम्भ, अंकुश,

तलवार तथा पानपात्र से युक्त, अत्यन्त प्रसन्नस्वरूप, सुन्दर, दशभुजाओं से युक्त, शरत्कालीन चन्द्रमा के समान गौरवर्णवाली, रुद्र के कंधे पर बैठी हुई, नवयुवति, पांचमुखों से सुशोभित, विहसित मुखवाली तथा उत्तरद्वार में स्थित द्वारनायिका सिद्धलक्ष्मी का स्मरण करता हूं।15।

पूर्वद्वार में स्थित द्वारनायिका उन्मनी वंदना– मैं उस उन्मनी देवी को नमस्कार करता हूं, जो उगते हुए सूर्य के समान कांतिवाली, अत्यन्त सुन्दर मुखवाली, मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाली, तीन आंखोंवाली माता हैं; पाश, अंकुश, वरमुद्रा तथा अभयमुद्रा करकमलों में धारण करने वाली, मन्द मुस्कानवाली, प्रसन्नस्वरूप, आलौकिक माणिक्य रत्नों से दीप्त सुन्दर अलंकारों से अलंकृत, लालवस्त्रवाली हैं; लाल कमल पर बैठी हुई हैं तथा पूर्वद्वार की नायिका हैं।16।

दक्षिणद्वार में स्थित द्वारनायिका दक्षिणकालिका वंदना– मैं उस दक्षिणकालिका को प्रणाम करता हूं, जो दण्ड, चक्र, कपाल, अभयमुद्रा, वरमुद्रा, डमरु, तर्जनीमुद्रा, खेट, खड्ग, खटवांग, पाश, कमण्डलु, अंकुश, शर, धनुष तथा नर मुण्डका धारण करने वाली, सम्पूर्ण रूप से खुले बालवाली, अर्द्धचन्द्रको धारण करने वाली, व्याघ्र चर्मरूपी वस्त्र से युक्त हैं तथा दक्षिण में

द्वारनायिका के रूप में स्थित हैं; मध्याह्न कालीन सूर्य के समान हैं तथा पांच मुखों वाली हैं।17।

भूपुर की प्रथम रेखा में स्थित अणिमा आदि ग्यारह सिद्धियों की वन्दना- मैं पूर्ण स्वरूप अणिमा, गरिमा, लघिमा, सर्वप्रसिद्ध महिमा, ईशित्व, शुद्ध वशित्व, प्राकाम्य, सर्वभुक्ति, इच्छा, प्राप्ति तथा सर्वाथ सिद्धि नामक उन सिद्धियों का स्मरण करता हूं जो कि प्रथम रेखा में स्थित हैं, महाप्रकट सिद्धि योगिनियां हैं; मस्तक पर अर्द्धचन्द्राकार मुकुटों को धारण करने वाली, निधिरूपी वाहनों पर स्थित हैं; पाश, अंकुश, कमल युगल से युक्त हाथवाली, तीन आंखवाली, लालवर्ण के वस्त्रों को धारण करने वाली तथा रक्तवर्ण की कांति से युक्त हैं।18।

भूपुर की द्वितीय रेखा में स्थित ब्राह्मी आदि आठ मातृकाओं की वन्दना- मैं आवरण रूप को धारण करने वाली ब्राह्मी, उस प्रकार माहेश्वरी, कुमार वर की सत्ता कौमारी, वैष्णवी, शूकर मुखवाली वाराही, देवराज की शक्ति माहेन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी प्रकट अम्बाओं की सर्वदा वन्दना करता हूं जो कि लाल कमल तथा कपाल से युक्त हाथ वाली हैं; जिनके शरीर की कांति नील कमल के समान अत्यन्त सुन्दर हैं; जो तीन

आंख वाली हैं; लालवस्त्र तथा रत्न के आभूषणों से अलंकृत हैं और लाल रेखा के चारों ओर विराजमान हैं।19।

तृतीयरेखा में सर्वसंक्षोभिणी आदि ग्यारह मुद्राओं की वन्दना– मैं सर्वसंक्षोभिणी, महायोनि, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्ववशंकरी, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहांकुशा, सर्वखेचरी, सर्वबीजा, सर्वयोनि तथा सर्वत्रिखण्डा प्रकट मुद्राओं का स्मरण करता हूं जो पाश, अंकुश तथा अपनी दो मुद्राओं से युक्त चार भुजावाली हैं; तीन आखों वाली तथा प्रसन्न मुखकमल से युक्त तृतीय रेखा में स्थित हैं; प्रकट मुद्रा योगिनी हैं तथा नाना प्रकार के अत्यन्त सुन्दर मणिरत्नों को धारण करने वाली हैं।20।

भूपुर चक्रेश्वरी श्रीत्रिपुरा वंदना– मैं बिम्ब फल के समान लाल ओष्ठवाली, शरत्कालीन चन्द्रमा के समान गौरमुख वाली, रत्नादि आभूषणों से उज्जवल कान्तिवाली, पुस्तक, अक्षमाला तथा कमल युगल से अंकित भुजाओं से सुशोभित, तीन आखों वाली, संक्षोभिणी मुद्रा तथा अणिमा सिद्धि के साथ चार्वाक दर्शन से युक्त, मोहन करने वाली, भूपुर चक्र की नायिका श्रीत्रिपुरा को नमस्कार करता हूं।21।

द्वितीयावरणवन्दनम्- वृत्तत्रय चक्र की वंदना- मैं श्वेत, लाल तथा कृष्णवर्ण के तीन वृत्तों से निर्मित, परम मातृका योगिनियों के साथ धर्म, अर्थ तथा कामरूपी त्रिवर्ग को सिद्ध करने वाले और भूलोक में दुर्लभ वृत्तत्रय नामक एक अन्य चक्र को प्रणाम करता हूं।

प्रथम वृत्त में स्थित कालरात्री आदि ऊनतीस मातृकाओं की वन्दना- मैं कालरात्री मातृका, उसके बाद खातिता मातृका, मातृका पद धारण करने वाली, गान करने वाली गायत्री मातृका तथा घण्टा मातृका, ङार्णात्मिका मातृका, भयंकर रूपवाली चण्डा मातृका, छात्मिका मातृका तथा जया नामक मूर्तिरूपिणी जया मातृका, झंकारिणी मातृका तथा ज्ञानरूपी शरीरवाली ज्ञानशरीरिणी मातृका, अतिदिव्य रूपवाली टंकहस्ता मातृका, ठंकारिणी मातृका, डंकारिणी मातृका और ढंकारिणी मातृका तथा णकारिणी मातृका, तकारिणी मातृका, थाणिक मूर्तिरूपिणी थाणी मातृका और दाक्षायणी मातृका तथा उस प्रकार की धात्री मातृका, नादा मातृका, उसके बाद पर्वतराज की पुत्री पार्वती मातृका, फेटकारिणी मातृका, उस प्रकार बन्धिनी मातृका, भद्रकाली मातृका, उसके बाद विष्णु की माया मातृका तथा श्री मातृका, षण्ढा मातृका और सरस्वती मातृका, फिर हंसवती मातृका, उन

सभी ऊनतीस शुभ मातृकाएं जो विहसित मुखवाली, अंकुश तथा पाश को धारण करने वाली, उगते हुए सूर्य के समान रक्तवर्ण वाली, तीन आंखों वाली, रक्तवर्ण वस्त्रों से युक्त तथा अर्द्धचन्द्रको धारण करने वाली हैं, को प्रथमवृत्त में निरन्तर नमस्कार करता हूं।2।

द्वितीयवृत्त में स्थित अमृता आदि सोलह मातृकाम्बाओं की वन्दना– मैं अब मातृका नाम को धारण करने वाली उस अमृता मातृकाम्बा, आकर्षिणी मातृकाम्बा, महेन्द्र की शक्ति इन्द्राणी मातृकाम्बा, ईशान की शक्ति ईशानी मातृकाम्बा, उमा नामक शक्ति उमा मातृकाम्बा, महान् ऊर्ध्वकेशी मातृकाम्बा, उसके बाद ऋद्धिरात्री मातृकाम्बा, ऋद्धीश्वरी मातृकाम्बा, लृता मातृकाम्बा, लृका मातृकाम्बा, उस एक पादवाली एकपादा मातृकाम्बा, उस ऐश्वर्यिका मातृकाम्बा, उस ओंकारात्मिका मातृकाम्बा, महान् औषधा मातृकाम्बा, अम्बिका मातृकाम्बा तथा अक्षरात्मिका मातृकाम्बा जो कि षोडश मातृकाम्बा हैं; इन रक्तवर्ण वाली, बाण तथा धनुष से युक्त हाथों वाली, विहसित मुखवाली, चन्द्रमा को धारण करने वाली तथा तीन आंखों वाली को मध्यस्थ वृत्त में नमस्कार करता हूं।3।

तृतीयवृत्त में स्थित कामेश्वरी आदि सोलह तिथिमातृकाम्बाओं की वंदना- मैं कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा, वह्निवासिनी, वज्रेश्वरी, शिवदूती, त्वरिता, कुलसुन्दरी, उसके बाद विमला, नीलपताका, विजया, मंगला, ज्वालामालिनी, विचित्रा तथा श्रीसुन्दरी, इन सोलह नित्यरूपा साक्षात् तिथि मातृकाम्बा, पाश, अंकुश, धनुष तथा बाण को धारण की हुई चार भुजावाली, उगते हुए सूर्य की प्रभा के समान लाल मुखवाली को तृतीयवृत्त में निरन्तर स्मरण करता हूं।4।

वृत्तत्रय चक्रेश्वरी त्रिपुरेशिनी वंदना- मैं तपे हुए स्वर्ण के समान कांतिवाली, विहसित मुखवाली, पुस्तक, अभयमुद्रा, वरमुद्रा तथा अक्षमाला को धारण करने वाली, चार भुजाओं वाली, मस्तक पर चूड़ामणि के रूप में अर्द्धचन्द्र को धारण करने वाली, स्मार्तशास्त्र, महायोनि मुद्रा तथा गरिमा सिद्धि, इन तीनों से युक्त चक्रेश्वरी भगवती त्रिपुरेशिनी को वृत्तत्रय चक्र में नमस्कार करता हूं।5।

तृतीयावरणवन्दनम्- षोडशदल चक्र की वन्दना- मैं पूर्ण चन्द्र के समान शुक्लवर्ण वाले, सोहल दलों से युक्त, सभी आशाओं को पूर्ण करने वाले, कमलाकार, चन्द्रमा के समान दिव्य तथा शुद्ध

सोलह दलों से संशोभित, अमृत की वृष्टि करने वाले चक्र की वंदना करता हूं।1।

षोडशदल चक्र में स्थित कामाकर्षिणी आदि सोलह नित्य शक्तियों की वंदना– मैं सबसे पहले कामाकर्षिणी नित्यशक्ति तथा बुद्ध्याकर्षिणी नित्यशक्ति, अंहकारकर्षिणी नित्यशक्ति, फिर शब्दाकर्षिणी नित्यशक्ति, देवी स्पर्शाकर्षिणी नित्यशक्ति तथा दूसरी रूपाकर्षिणी नित्यशक्ति, साक्षात् नित्यशक्ति उस रसाकर्षिणी नित्यशक्ति, फिर गंधाकर्षिणी नित्यशक्ति, देवी चित्ताकर्षिणी नित्यशक्ति, धैर्याकर्षिणी नित्यशक्ति, स्मृत्याकर्षिणी नित्यशक्ति, नामाकर्षिणी नित्यशक्ति, फिर बीजाकर्षिणी नित्यशक्ति, साक्षात् आत्माकर्षिणी नित्यशक्ति तथा उस अमृताकर्षिणी नित्यशक्ति, उसके बाद देहाकर्षिणी नित्यशक्ति को जो कि शुभ्रवर्ण की हैं; तीन आंखों वाली हैं; चन्द्रमा को धारण करने वाली हैं; हाथों में पाशअंकुश, स्फटिकमाला, पूर्णपात्र तथा वरमुद्रा को धारण की हुई हैं; इन गुप्त योगिनियों की वंदना करता हूं।2।

षोडशदल चक्रेश्वरी त्रिपुरेश्वरी वंदना– मैं उस विद्राविणीमुद्रा, लघिमा सिद्धि तथा बौद्ध दर्शन से युक्त, साक्षात् चन्द्रमा की किरणों के समान गौरवर्ण मुखवाली, विहसित कमल मुखवाली, हाथों में सर्वदा पाश, अंकुश, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा को धारण

करने वाली, चन्द्रमा को धारण करने वाली, चन्द्रात्मक षोडशदल चक्रेश्वरी त्रिपुरेश्वरी की वंदना करता हूं।3।

चतुर्थावरणवंदनम्- अष्टदल चक्र की वंदना- मैं देदीप्यमान, देव सैन्यों के द्वारा पूजित, शुभ अष्टदलकमल वाले, सुन्दर, बंधूक पुष्प के समान लालवर्ण के विग्रहवाले संक्षोभण चक्र का भजन करता हूं।1।

अष्टदल चक्र में स्थित अनंगकुसुमा आदि आठ देवियों की वंदना- मैं पहले अनंगकुसुमा, माता अनंगमेखला, साक्षात् अनंगमदना और अनंगमदनातुरा, उस प्रकार अंगनरेखा, अनंगवेगिनी नामक देवी, अनंगांकुशा तथा अनंगमालिनी जो सभी विहसित मुखवाली, तीन आंखोंवाली, नवयुवतियां हैं; बंधूक पुष्पके समान लालवर्ण के सुन्दर शरीरवाली हैं; नीलकमल, नीलमणि, पाश तथा अंकुश को धारण करने वाली हैं; इन आठ गुप्ततर योगिनियों का स्मरण करता हूं।2।

अष्टदल चक्रेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की वंदना- सर्वाकर्षिणी मुद्रा, महिमा सिद्धि तथा गाणपत्य दर्शन की विशिष्ट शक्ति से युक्त; पुस्तक, अक्षमाला, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा से युक्त हाथों वाली;

तीन आंखों से सुशोभित; आकाशात्मक अष्टदल चक्र की प्रसिद्ध चक्रेश्वरी उस त्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करना चाहिये।3।

पंचमावरणवंदनम्- चतुर्दशार चक्र की वंदना- मैं अन्य एक चक्र जो कि चतुर्दशार से विनिर्मित, सिन्दूरवर्ण से युक्त, सौभाग्य को देने वाला तथा देवगणों के द्वारा सर्वदा पूज्य है, उसका निरन्तर भक्तिपूर्वक मन से स्मरण करता हूं।1।

चतुर्दशार चक्र में स्थित सर्वसंक्षोभिणी आदि चौदह शक्तियों की वंदना- मैं सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्लादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्वजृम्भिणी, सर्ववशंकरी, सर्वरंजनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधिनी, सर्वसम्पत्तिपूर्णा, सर्वमंत्रमयी तथा सर्वद्वन्द्वक्षयकारिणी नामक शक्तियां जो कि रक्तवर्णवाली तथा हाथों से पाश, अंकुश, दर्पण और पानपात्र को धारण करने वाली हैं, उन चौदह सम्प्रदाय योगिनियों को निरन्तर नमस्कार करता हूं।2।

चतुर्दशार चक्रेश्वरी त्रिपुरवासिनी वंदना- मैं सिन्दूर के समान लालवर्ण के शरीरवाली, विहसित मुखवाली, दिव्य चार भुजाओं में पुस्तक, स्फटिक मालिका, अभयमुद्रा तथ वरमुद्रा को धारण करने वाली, तीन आंखों वाली, ईशितासिद्धि, सर्ववशंकरी मुद्रा

तथा विविध छः न्यायादि शास्त्रों से युक्त, मायात्मक चक्र की चक्रेश्वरी उस त्रिपुरवासिनी का ध्यान करता हूं।3।

षष्ठावरणवन्दनम्- बहिर्दशार चक्र की वंदना- मैं एक अन्य चक्र की हृदय से वंदना करता हूं, जो कि दाड़िम पुष्प के समान लालवर्ण वाले, दीप्त कांतिवाले, दश अराओं से अंकित अंगवाले, सर्वार्थसाधक तथा वायुतत्त्वात्मक है।1।

बहिर्दशार चक्र में स्थित सर्वसिद्धिप्रदा आदि दश देवियों की वंदना- मैं सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःखविमोचिनी, सर्वमृत्युविनाशिनी, सर्वविघ्ननिवारिणी, सर्वांगसुन्दरी तथा सर्वसौभाग्यदायिनी- इन प्रसिद्ध कुल योगिनियों को नमस्कार करता हूं; जो कि पाश, अंकुश, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा धारण की हुई हैं; रक्तवर्ण के वस्त्रों से युक्त हैं; विहसित कमल मुखवाली है; बंधूक पुष्प के समान रक्तवर्ण की कांतिवाली हैं; अर्द्धचन्द्र को धारण की हुईं हैं तथा रत्नों से अलंकृत अंगवाली हैं।2।

बहिर्दशार चक्रेश्वरी त्रिपुराश्री वंदना- मैं आग में तपे हुए सोने के समान सुन्दर कांतिवाली उस त्रिपुराश्री की सर्वदा वंदना करता

हूं; जो मुक्ता की अक्षमाला, पुस्तक, वरमुद्रा तथा अभयमुद्रा से युक्त करकमलवाली हैं; सर्वोन्मादिनी मुद्रा, वैदिक दर्शन तथा वशित्व सिद्धि से युक्त हैं; पवनात्मक बहिर्दशार चक्रेश्वरी हैं।3।

सप्तमावरणवंदनम्- अन्तर्दशार चक्र की वंदना- मैं एक दूसरे चक्र की वंदना करता हूं, जो कि जपापुष्प के समान रक्तवर्ण वाले, साक्षात् श्री से युक्त, सर्वरक्षाकर, दशकोणाकार, तैजसात्मक, दिव्य तथा सौरसिद्धान्तात्मक है।1।

अन्तर्दशार चक्र में स्थित सर्वज्ञा आदि दश शक्तियों की वंदना- मैं सर्वज्ञा शक्ति, उस सर्वशक्तिस्वरूपिणी शक्ति, अन्य शक्ति सर्वैश्वर्यप्रदायिनी, सर्वज्ञानस्वरूपिणी, उस सभी व्याधियों के उन्मूलन के लिये उत्सुक सर्वव्याधिविनाशिनी देवी, सर्वधारस्वरूपिणी और सर्वपाप विनाशिनी तथा आनन्दरूपा नामक सर्वानन्दस्वरूपिणी शक्ति, सर्वरक्षास्वरूपिणी तथा सद्भक्तों को वांछित फल प्रदान करने वाली, सर्वेप्सितार्थप्रदायिनी को नमस्कार करता हूं; जो साक्षात् निगर्भयोगिनी कहलाती है; मुक्ता माला धारण करने वाली, मस्तक पर चन्द्रमा से युक्त तीन आंखों वाली, उगते हुए सूर्य के समान लाल कांतिवाली हैं; ज्ञानमुद्रा, वरमुद्रा, टंक तथा अभयमुद्रा से युक्त हाथों वाली है।2।

अन्तर्दशार चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी वंदना– मैं उगते हुए सूर्यमण्डल के समान लाल कान्तिवाली, अर्द्धचन्द्र को धारण करने वाली, विहसित मुखवाली, लालवर्ण के वस्त्र तथा अच्छे रत्नों को धारण करने वाली, चन्द्र, वह्नि तथा सूर्यरूपी तीन नेत्रों से सुशोभित, प्राकाम्य सिद्धि से युक्त, नवयुवति, सौरदर्शन तथा सर्वमहांकुशा मुद्रा से युक्त; हाथों में पाश, अंकुश, अभयमुद्रा, कपाल, वरमुद्रा तथा अक्षमाला को धारण करने वाली उस तैजसात्मक अन्तर्दशार चक्रेश्वरी तत्त्वेश्वरी त्रिपुरमालिनी को नमस्कार करता हूं।3।

अष्टमावरणवंदनम्– अष्टकोण चक्र की वंदना– मैं उस अन्य चक्र की वंदना करता हूं; जो कि आलौकिक रूपवाले, सभी रोगों का नाश करने वाले, सुन्दर, स्पष्ट, अष्टकोणों से संयोजित, उद्दीप्त कान्तिवाले, पद्मराग के समान प्रभावाले तथा कलात्मक है।1।

अष्टकोण चक्र में स्थित वशिनी आदि आठ वाग्देवताम्बाओं की वंदना– मैं वशिनी नामकी वाग्देवताम्बा, वाङ्निलय की अधिष्ठात्री देवी कामेश्वरी, उस प्रकार मोहिनी तथा विमला, अरुणा नामकी वाग्देवताम्बा और जयिनी नामकी वाग्देवताम्बा, सर्वेश्वरी तथा उस कौलिनी को सदैव नमस्कार करता हूं; जो कि लाल वस्त्रवाली, मस्तक पर अर्द्धचन्द्र को धारण करने वाली, सर्वदा प्रसन्न रहने वाली, स्तनों के भार से झुकी हुई हैं तथा हाथों में

माला, धनुष, पुस्तक तथा पाश को धारण करने वाली परापर नामक रहस्य योगिनियां हैं।2।

अष्टकोण चक्रेश्वरी त्रिपुरा सिद्धा वंदना– मैं सर्वरोगहर अष्टकोण चक्र की अधिष्ठात्री त्रिपुरा सिद्धा को नमस्कार करता हूं; जो कि खेचरी मुद्रा के साथ, रक्तवस्त्रों से युक्त, शुभ भुक्ति सिद्धि तथा वैष्णव दर्शन से युक्त, मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाली, शरत्कालीन चन्द्रमा के समान गौरवर्णवाली, तीन आंखों से सुशोभित मुख कमल वाली तथा पाश, अंकुश, अभयमुद्रा और कपाल से युक्त हाथवाली हैं।3।

नवमावरणवंदनम्– त्रिकोणचक्र की वंदना– मैं बन्धूक पुष्प के समान लाल वर्ण से युक्त दिव्य रूपवाले, तीन कोणों से विनिर्मित, नादात्मक, चित्स्वरूप, सर्वसिद्धिप्रद नामक चक्र को नमस्कार करता हूं।1।

त्रिकोण के पूर्व में कल्पित तीन रेखाओं में गुरु परम्परा की वंदना– मैं उस त्रिकोण की पूर्वी रेखा के पूर्व में कल्पित तीन रेखाओं का चिंतन करता हूं तथा उनमें स्थित गुरुपरम्परा अपने कल्प के अनुसार सदैव स्मरण करता हूं।

प्रथम रेखा में दिव्यौघ, सिद्धौघ तथा सुमानवौघ गुरुजनों की वंदना– मैं प्रथम रेखा में स्थित दिव्यौघ, सिद्धौघ तथा सुमानवौघ सभी गुरुजनों को नमस्कार करता हूं।

द्वितीय रेखा में स्थित अपने श्रीगुरु आदि सात गुरुजनों की वंदना– मैं द्वितीय रेखा में स्थित सुप्रसिद्ध, अपने गुरु के क्रम से सभी गुरुजनों को नमस्कार करता हूं; जो कि शान्त स्वभाव वाले, दो आंखों वाले, स्फटिक के समान शुभ्र कान्तिवाले हैं; वरमुद्रा तथा अभयमुद्रा को धारण करने वाले हैं तथा अपनी शक्तियों के साथ विराजमान हैं।

तृतीयरेखा में स्थित श्रीदक्षिणामूर्त्ति गुरु की वंदना– मैं शान्त स्वरूप वाले, तीन आंख वाले, चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति वाले, चार शुभ भुजाओं में मोती माला, अमृत कलश, ज्ञानमुद्रा तथा पुस्तक धारण करने वाले, दिव्य वस्त्रों से युक्त, चन्दन गंध के लेप से तथा मणिरत्नों से उज्ज्वल अंगवाले, वीरासन पर बैठे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने वाले श्रीदक्षिणामूर्त्ति गुरु का स्मरण करता हूं।2।

त्रिकोण के बाहर षडंगयुवतियों की वंदना– मैं चक्र में त्रिकोण के बाहर षडंगयुवति नामक अंगदेवियों का स्मरण करता हूं; जो कि

रक्त वर्णवाली है; अपनी मुद्राओं के चिह्न से अंकित हाथवाली हैं तथा प्रत्येक कोण में युगलात्मक रूप से स्थित हैं।3।

त्रिकोण के बाहर षोडशी तिथि आदि तीन नित्याकलाओं की वंदना– मैं इस त्रिकोण के बाहर अग्रकोण में तिथि स्वरूप उस नित्या कलाका, दक्ष में सप्तदशी का तथा वाम में उस अष्टादशी का निरन्तर स्मरण करता हूं; जो कि सभी मन का रमण कराने वाली हैं; सिन्दूर वर्णवाली हैं; मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाली है; विकसित लाल कमल के समान तीन आंखों वाली हैं तथा पाश, अंकुश, धनुष और बाण को धारण करने वाली नित्य कलाएं हैं।4।

त्रिकोण के कल्पित चार भागों में स्थित चार आयुध शक्तियों की वंदना– मैं यहां पर चार भागों की कल्पना करके उनमें स्थित जृम्भण करने वाली बाणशक्ति, सम्मोहन करने चापशक्ति, वशीकरण करने वाली पाश शक्ति तथा स्तम्भन नामक अंकुश शक्ति का स्मरण करता हूं; जो कि चार आयुध शक्ति कहलाती हैं; सभी विहसित मुख से युक्त अनगिनत मस्तकों वाली, वरमुद्रा तथा अभयमुद्रा से युक्त, अरुणवर्ण वाली हैं।5।

त्रिकोण चक्रेश्वरी त्रिपुराम्बिका वंदना– मैं नाद नामक सिद्धि के कारणस्वरूप सुन्दर चक्र में स्थित चक्रेश्वरी त्रिपुराम्बिका की वंदना करता हूं; जो कि उगते हुए सूर्य की करोड़ों किरणों के समान कान्तिवाली हैं; अर्द्ध चन्द्रांकित दिव्य रत्नों से निर्मित मुकुट का धारण करने वाली है; अभयमुद्रा, पुस्तक, वरमुद्रा तथा अक्षमाला से युक्त हाथों वाली है; इच्छासिद्धि, शाक्तदर्शन तथा सर्वबीजा नामक मुद्रा से युक्त है।6।

दशमावरणवंदनम्– बिन्दु चक्र की वंदना– मैं पुनः बिन्दु नामक अन्य सुन्दर चक्र का स्मरण करता हूं; जो कि दिव्य रूपवाले हैं; साक्षात् शिवात्मक उद्दीप्त कान्तिवाले हैं; शुक्ल तथा अरुण के मिश्र वर्णवाले बिन्दु रूप सर्वानन्दमय हैं।1।

रति आदि पन्द्रह देवियों की वंदना– मैं पहले रति, उसके बाद प्रीति, मनोभवा, द्राविणी, क्षोभिणी, वशिनी, आकर्षिणी तथा सुमीनकेता; पुनः अन्य देवी सुभगा तथा भगा, उस भगसर्पिणी, पुनः देवी भगमालिनी; उस प्रकार देवी अनंगा, अनंग मेखला तथा अनंग मदनातुरा; इन देवियों का स्मरण करता हूं; जो कि रक्त वर्ण की हैं; मणि की माला धारण करने वाली हैं; हाथों में पाश, अंकुश, बाण तथा धनुष धारण किया है तथा परापर योगिनियां कहलाती हैं।2।

बिन्दु चक्रेश्वरी त्रिपुरभैरवी की वंदना– मैं बिन्दु चक्रेश्वरी त्रिपुरभैरवी को नमस्कार करता हूं; जो कि सूर्यमण्डल के समान रक्तवर्ण की कान्तिवाली नवयुवती हैं; नरमुण्डों की माला से युक्त हैं; चन्द्र, सूर्य तथा अग्निरूपी तीन आंखों वाली हैं; मस्तक पर अर्द्धचन्द्र को धारण करने वाली हैं; माणिक्य रत्नों से युक्त लाल वर्ण के वस्त्रों से अलंकृत हैं; रक्तसे लिप्त स्तन युगल से शरीर वाली हैं; हाथों में अक्षमाला, अभयमुद्रा, वरमुद्रा तथा पुस्तक धारण करने वाली हैं; बिन्दु चक्र में प्राप्ति सिद्धि, योनि मुद्रा तथा शैव दर्शन से युक्त हैं तथा विहसित मुखवाली हैं।3।

एकादशावरणवंदनम्– बिन्दु चक्रान्तर्गत महाबैन्दव चक्र की वंदना– मैं सर्वानन्दमय चक्र के अन्तर्गत महाबैन्दव नामक एक अन्य चक्र की वंदना करता हूं; जो कि परब्रह्म तत्त्वात्मक एकमात्र अद्वैत स्वरूप है।1।

महाबैन्दव चक्रेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की वंदना– मैं साक्षात् श्रीशक्ति से सम्बन्धित कौल दर्शन, त्रिखण्डा महामुद्रा तथा सर्वकाम सिद्धि से युक्त; रक्तवर्ण की कान्तिवाली; पाश, धनुष, बाण तथा अंकुश को धारण करने वाली; दिव्यरूपवाली; जगत को मोहित करने

वाली तथा समरसाकार नामक ब्रह्मात्मक चक्र में स्थित देवी त्रिपुरसुन्दरी की वंदना करता हूं।2।

कल्पित षट्कोण में ब्रह्मा आदि छः शाम्भवों की वंदना– मैं फिर वहां पर षट्कोण की कल्पना करके फिर क्रम से छः शाम्भवों को नमस्कार करता हूं।3।

षट्कोण के मध्य में श्रीमहाशाम्भव की वंदना– मैं मध्य में श्रीमहाशाम्भव को नमस्कार करता हूं; जो कि छः शाम्भवों के ईश हैं; साक्षात् चैतन्यस्वरूप हैं; छः मुखों वाले हैं; बारह हाथों वाले हैं तथा मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाले हैं।4।

महाबैन्दव चक्र में श्रीमातंगिनी महाविद्या पीठशक्ति की वंदना– मैं नाना प्रकार के रत्नों से निर्मित विचित्र अलंकारों को धारण करने वाली, श्यामवर्ण मुखवाली, विहसित मुखवाली, मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने वाली, दिव्य अंकुश, तलवार, शुभपाश तथा ढाल से युक्त, पीन स्तनों को धारण करने वाली तथा सिंह के समान कटिवाली मातंगिनी देवी को नमस्कार करता हूं।5।

अष्टाक्षर मांतगी मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषिः, निवृत् छन्दः, सर्वसंमोहिनी देवता, सर्वजन संमोहनार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्- श्यामांगी वल्लकीं दोर्भ्यां वादयन्तीं सुभूषणाम् ।चन्द्रावतंसां विविधैर्गायनैर्मोहर्तीं जगत्।।

मंत्र- 'कामिनी रंजिनी स्वाहा।' इस प्रथम मत्रं से दीक्षा ग्रहण कर आगे बढ़ना चाहिये। बीस हजार जप करके मधुयुक्त मधूक पुष्पों से होम करने से जगत का वशीकरण होवे।

दशाक्षर मातंगी मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री मातंगी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ दक्षिणामूर्त्ये ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। मातंगी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हूं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- श्यामांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्विभ्रतीं। पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्त द्विषाम्।। रत्नांलकरण प्रभोज्जवल तनुं भास्वत्किरीटां शुभां। मातंगी मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धि प्रदाम्।।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्ये फट् स्वाहा।'

सवा लाख जप करके शर्करा, शहद और घृत के मिश्रण से पलाश की समिधाओं द्वारा होम करने से मंत्र सिद्ध होता है, वशीकरण कार्य सिद्ध होते हैं तथा वाक्सिद्धि एवं धनधान्य की अभिवृद्धि होती है।

श्रीलघुश्यामा मातंगी- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीलघुश्यामा मंत्रस्य मदन ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः, भगवती लघुश्यामा देवता, ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाखिलाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ मदनऋषये नमः शिरसि। निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। देवी लघुश्यामा देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजायै नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

रत्यादिन्यास- ऐं रत्यै नमः मूर्ध्नि। ह्रीं प्रीत्यै नमः हृदि। क्लीं मनोभवायै नमः पादयो। ऐं इच्छाशक्तयै नमः मुखे। ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः कण्ठे। क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः लिंगे।

बाणन्यास- द्रां द्रावणबाणाय नमः शिरसि। द्रीं शोषणबाणाय नमः मुखे। क्लीं तापनबाणाय नमः हृदि। ब्लूं मोहनबाणाय नमः गुह्ये। सः उन्मादनबाणाय नमः पादयोः।

करन्यास- ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः। चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः। मातंगि अनामिकाभ्यां नमः। सर्ववशंकरि कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ऐं नमः हृदयाय नमः। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा। चाण्डालि शिखायै वषट्। मातंगि कवचाय हुम्। सर्ववशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ब्राह्म्यादि मातृकान्यास- आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः मूर्ध्नि। ईं लां माहेश्वरी कन्यकायै नमः वामांसे। ऊं हौं कौमारीकन्यकायै नमः वामपार्श्वे। ऋं सां वैष्णवीकन्यकायै नमः नाभौ। लृं षां वाराही कन्यकायै नमः दक्षपार्श्वे। ऐं शां इन्द्राणी कन्यकायै नमः दक्षांगे। औं वां चामुण्डा कन्यकायै नमः कुकुदि। अः लां महालक्ष्मी कन्यकायै नमः हृदि।

सिद्धिन्यास- ॐ ऐं अणिमासिद्धिकन्यकायै नमः ललाटे। ॐ ऐं महिमा सिद्धिकन्यकायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ ऐं लघिमा सिद्धिकन्यकायै नमः कण्ठे। ॐ ऐं गरिमा सिद्धिकन्यकायै नमः हृदि। ॐ ऐं ईशिता सिद्धिकन्यकायै नमः नाभौ। ॐ ऐं वशिता सिद्धिकन्यकायै नमः मूलाधारे। ॐ ऐं प्राकाम्य सिद्धिकन्यकायै नमः लिंगे। ॐ ऐं प्राप्ति सिद्धिकन्यकायै नमः मूर्ध्नि।

अप्सरान्यास- ॐ क्लीं उर्वशी अप्सरः कन्यकायै नमः मूर्ध्नि। ॐ क्लीं मेनका अप्सरः कन्यकायै नमः ललाटे। ॐ क्लीं रम्भा अप्सरः कन्यकायै नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं घृताची अप्सरः कन्यकायै नमः वामनेत्रे। ॐ क्लीं पुंजिकस्थला अप्सरः कन्यकायै नमः वक्त्रे। ॐ क्लीं सुकेशी अप्सरः कन्यकायै नमः दक्षिणकर्णे।

ॐ क्लीं मंजुघोषा अप्सरः कन्यकायै नमः वामकर्णे। ॐ क्लीं महारंगवती अप्सरः कन्यकायै नमः ककुदि।

अष्टकन्यास- ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमः दक्षांसे। ॐ क्लीं गंधर्वकन्यकायै नमः वामांसे। ॐ क्लीं सिद्धकन्यकायै नमः हृदि। ॐ क्लीं नरकन्यकायै नमः दक्षस्तने। ॐ क्लीं नागकन्यकायै नमः वामस्तने। ॐ क्लीं विद्याधरकन्यकायै नमः जठरे। ॐ क्लीं किम्पुरुषकन्यकायै नमः गुह्ये। ॐ क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः मूलाधारे।

मंत्रवर्णन्यास- ॐ ऐं नमः दक्षिणबाहुमूले। ॐ नं नमः दक्षकूपरि। ॐ मं नमः दक्षिणमणिबंधे। ॐ उं नमः दक्षांगुलिमूले। ॐ च्छिं नमः दक्षांगुल्यग्रे। ॐ ष्टं नमः वामबाहूमूले। ॐ चां नमः वाम कूपरि। ॐ डां नमः वाममणिबंधे। ॐ लिं नमः वामांगुलिमूले। ॐ मां नमः वामांगुल्यग्रे। ॐ तं नमः दक्षपादमूले। ॐ गिं नमः दक्षजानुनि। ॐ सं नमः दक्षगुल्फे। ॐ र्वं नमः दक्षपादांगुलिमूले। ॐ वं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ शं नमः वामपादमूले। ॐ कं नमः वामजानुनि। ॐ रिं नमः वामगुल्फे। ॐ स्वां नमः वामापादांगुलि मूले। ॐ हां नमः वाम पादांगुल्यग्रे।

ध्यानम्- ॐ माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभाम्बरां, रम्यालक्त कलिप्त पादकमलां नेत्रत्रयोल्लासिनीम्। वीणावादन तत्परां सुरनतां कीरच्छदश्यामलां मातंगी शशिशेखरामनु भजेत् तांबूलपूर्णाननाम्।।

मंत्र- 'ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातंगि सर्ववशंकरि स्वाहा।'

सर्ववशीकरण हेतु यह मातंगी विद्या प्रमुख है। एक लाख जप पश्चात् महुए के पुष्पों एवं समिधाओं से होम करें। इसके प्रभाव से राजा, प्रजा का वशीकरण होता है, समस्त कुप्रयोग विनष्ट होते हैं तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

श्रीमातंगी गायत्री- 'ॐ मातंग्यै च विद्महे उच्छिष्ट चाण्डाल्यै च धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्।

द्वात्रिंशदक्षरो मातंगी मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य मंत्रस्य मतंग ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री मातंगी देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास- ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः। उच्छिष्ट चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः।

श्रीमातंगेश्वरि अनामिकाभ्यां नमः। सर्वजनवशंकरि कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः। नमो भगवति शिरसे स्वाहा। उच्छिष्ट चाण्डालि शिखायै वषट्। श्रीमातंगेश्वरि कवचाय हुम्। सर्वजनवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- घनश्यामलांगीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं श्रृण्वतीं रक्तवस्त्राम्। सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयन्तीं मातंगीम्।।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चाण्डालि श्रीमातंगेश्वरि सर्वजनवशंकरि स्वाहा।'

यथासम्भव जप कर मधुयुक्त महुऐ के पुष्प एवं समिधा से होम करें। मल्लिका पुष्प होम से योग सिद्धि, बेलपुष्प से राज्य-धनलाभ, पलाश पत्र एवं फल से जनवशीकरण, गिलोय से रोगनाश, नीम के टुकडों (नाममात्र) व चावल होम से लक्ष्मी प्राप्ति, नीम के तेल से सिक्त नमक से शत्रुनाश, लवण से आकर्षण, अन्न से आहार सिद्धि, हरिद्रा व नमक से स्तभन, अष्टंगध से संसार वशीकरण, अष्टगंध को अभिमंत्रित कर तिलक

लगाने से जगत्प्रिय होवे, केले के फल के होम से समस्त कामनाओं की पूर्ति होवे।

वार्ताली मातंगी- 'ॐ नमो भगवति देवि कूष्माडिनी सर्वकार्य प्रसाधिनि सर्वनिमित्त प्रकाशिनी एह्येहि त्वर त्वर वरं देहि लिहि लिहि मातंगिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा।'

सुमुखी मातंगी- विनियोगः- अस्य श्रीसुमुखीमंत्रस्य भैरव ऋषिः, गायत्रीश्छन्दः, सुमुखीदेवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- भैरव ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सुमुखी देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनी अंगुष्ठाभ्यां नमः। सुमुखी तर्जनीभ्यां नमः। देवि मध्यमाभ्यां नमः। महापिशाचिनी अनामिकाभ्यां नमः। ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ठः ठः ठः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास– ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनी हृदयाय नमः। सुमुखि शिरसे स्वाहा। देवि शिखायै वषट्। महापिशाचिनी कवचाय हुं। ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर परिच्छदाम्। रक्तालंकार संयुक्तां गुंजाहार विभूषिताम्।। षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत पयोधराम्। कपाल कर्त्रिका हस्तां पर ज्योतिः स्वरूपिणीम्।।

मंत्र– 'ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमुखी देवि महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः।

एक लाख जप कर होमादि द्वारा मंत्र को विधिवत् सिद्ध करे। उच्छिष्ट मुंह से दस हजार जप करने से संपत्ति लाभ होता है। दही से सिक्त पीली सरसों एवं चावल के होम से मंत्री एवं राजा का वशीकरण होवे। खीर होम से विद्या एवं यश प्राप्त हो। मधु तथा घृतयुक्त पान के पत्तों के होम से महासमृद्धि का लाभ हो। घी से सिक्त बेल के हजार पत्रों से एक मास तक होम करने से बंध्या स्त्री भी पुत्ररत्न प्राप्त करें। बन्धुक पुष्पों के होम से परम सौभाग्य प्राप्त होता है। नित्य अन्त में निर्जन स्थान में सात्विक बलि प्रदान करे।

ज्येष्ठ मातंगी मंत्र- 'ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ मातंगि नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनि त्रैलोक्यवशंकरि स्वाहा।' यह मंत्र भी जूठे मुंह जपना चाहिये। तंत्रदीपनी के अनुसार न्यासादि की आवश्यकता नहीं हैं।

राजमातंगी- विनियोगः- ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि, गायत्री छन्दः, श्रीराजमातंगीदेवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यानम्- ध्यायेयं रत्नपीठे शुककल पठितं श्रृण्वतीं श्यामलांगीं, न्यस्तैकांघ्रि सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्। कल्हाराबद्धमालां नियमित विलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातंगीं शंखपात्रां मधुमद विवशां चित्रकोद्भासि मालाम्।।

मंत्र- 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति राजमातंगीश्वरि सर्वजनमनोहारिणि सर्वमुखरंजिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज वशंकरि सर्वस्त्रीपुरुष वशंकरि सर्वदुष्ट मृग वशंकरि सर्वसत्व वशंकरि सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं।'

यह सर्वजन वशीकरण सिद्ध विद्या है। जप उपरान्त् त्रिमधुरयुक्त मधूकपुष्पों से दशांश होम करे।

शत्रु विध्वंसक मातंगनी मंत्र- 'ॐ ह्रीं क्षां लोहभंज किलि किलि स्वाहा। अमुकं काट्य काट्य मारय मारय स्वाहा।'

देवी का पंचोपचार पूजन करें। पूजन पश्चात् विधिपूर्वक एक महीने तक नित्य 1100 मंत्रजप करने से साधक शत्रु का समूह सहित नाश होता है। साधक की युद्ध में सर्वत्र विजयी होती है। एक लाख जप करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

कर्णमातंगी मंत्र- 'ऐं नमः श्रीकर्ण मातंगि अमोघे सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर-अवतर सत्यं कथय-कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नमः।' इस मंत्र के प्रभाव से साधक भूत वर्तमान एवं भविष्य का ज्ञाता हो जाता है।

चण्डमातंगी मंत्र- 'ह्रीं नमः हिलि-हिलि चण्डमातंगिनी स्वाहा।' यह विद्या शत्रु का विनाश कर शास्त्रार्थ में विजय प्रदान करती है।

त्रैलोक्य मंगल श्रीमातंगी कवचम्- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमातंगी कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः, विराट छन्दः, श्रीमातंगीदेवता, चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः।

कवच- ॐ शिरो मातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी। तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम।।

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा। त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी मम।।

ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघयोश्च हरप्रिया। महामाया पादयुग्मे सर्वांगेषु कुलेश्वरी।।

अंगं प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी। ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन्मातंगीनाम संस्थिता।।

रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च। नेत्रयोः सुमुखी रक्षेत् देवी रक्षतु नासिकाम्।।

महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा। लज्जा रक्षतु मां दन्तान्चोष्ठौ सम्मार्जनी करा।।

चिबुके कण्ठदेशे च ठकार त्रितयं पुनः। सविसर्गं महादेवि! हृदयं पातु सर्वदा।।

नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकाऽवतु लोचने। उदरे पातु चामुण्डा लिंगे कात्यायनी तथा।।

उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतु चाम्बिका। भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा।।

जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका। विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे।।

नैर्ऋत्यां सुदया रक्षेद् वायव्यां पातु लक्ष्मणा। ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातंगी शुभकारिणी।।

रक्षेत्सुरेशी चाग्नेय्यां बगला पातु चोत्तरे। ऊर्ध्वं पातु महादेवि! देवानां हितकारिणी।।

पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी। प्रणवं च तमोमाया कामबीजं च कूर्चकम्।।

मातंगिनी डेयुतास्त्रं वह्निजायाऽवधिर्मनुः। सार्द्धैकादश वर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा।।

फलश्रुति– इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यतरं परम्। त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं देवदुर्लभम्।।

य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते संपदालयम्। परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।

गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि। ऐश्वर्यं सु कवित्वं च वाक् सिद्धिं लभते ध्रुवम्।।

नित्यं तस्य तु मातंगी महिला मंगलं चरेत्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुर सत्तमाः।।

ब्रह्मराक्षस वेताला ग्रहाद्या भूतजातयः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते।।

कवचं धारयेद्यस्तु सर्वासिद्धिं लभेद् ध्रुवम्। राजानोऽपि च दासाःस्युः षट्कर्माणि च साधयेत्।।

सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहु भाषितैः। इदं कवचमज्ञात्वा मातंगीं यो भजेन्नरः।।

अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः। गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः। तस्मै मातंगिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति।।

साधक विधिवत् गुरु पूजा करने के पश्चात् इस कवच का पाठ करे तो उसे वाक्सिद्धि तथा कवित्व शक्ति प्राप्त होती है। भोजपत्र पर निर्माण कर इस कवच को धारण करने से समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं तथा तंत्रोक्त षट्कर्म सिद्ध हो जाते हैं। जो कोई इस कवच के बिना मातंगी जप करता है, वह दरिद्र, मूढ़, क्षीण आयु हो जाता है।

श्रीमातंगी हृदय स्तोत्रम्- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमातंगी हृदयस्तोत्रमंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीमातंगी देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकं सर्ववान्छितार्थ सिद्धये पाठे विनियोगः।

करन्यास- ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ हूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हूं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ॐ श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां, भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकर करासेव्यकन्जांघ्रि युग्माम्। नीलाम्भोजां शुकान्तिं निशिचर निकरारण्य दावाग्निरूपां।। पाशं खंगं चतुर्भिर्वर

कमलकरैः खेटकं चांकुशंच। मातंगीमावहन्तीमभिमतफलदां मोदिनीं चिन्तयामि।।

स्तोत्रम्– नमस्ते मातंग्यै मृदुमुदित तन्वै तनुमतां। परश्रेयोदायै कमलचरण ध्यानमनसाम्।।

सदा संसेव्यायै सदसि विबुधैर्द्दिव्यधिषणैः। दयार्द्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे।।

परं मातस्ते यो जपति मनुमव्यग्रहृदयः। कवित्वं कल्पानां कलयति सुकल्पः प्रतिपदम्।।

अपि प्रायो रम्यामृतमयपदा तस्य ललिता। नर्टीमन्या वाणी नटति रसनायां चपलिता।।

तव ध्यायन्तो ये वपुरनुजपन्ति प्रवलितं। सदा मन्त्रं मातर्न हि भवति तेषां परिभवः।

कदम्बानां मालाः शिरसि तव युन्जन्ति सदये। भवन्ति प्रायस्ते युवतिजन यूथस्ववशगाः।।

सरोजैस्साहस्रै सरसिज पदद्वन्द्वमपि च ये। सहस्रं नामोक्त्वा तदपि तव डेन्तं मनुमितम्।

पृथङ्नाम्ना तेनायुत कलितमर्चन्ति खलु ते। सदा देवव्रातप्रणमित पदांभोजयुगलाः।।

तव प्रीत्यै मातर्द्ददति बलिमाधाय बलिना। समत्स्यं मांसं वा सुरुचिरतम् राजरुचितम्।

सुपुण्या ये स्वान्तस्तव चरणमोदैकरसिका। अहो भाग्यं तेषां त्रिभुवनमलं वश्यमखिलम्।।

लसल्लोल श्रोत्राभरणकिरण कान्तिकलितं। मितस्मित्यापन्न प्रतिभितममन्नं विकरितम्।।

मुखाम्भोजं मातस्तव परिलुंठद्भ्रू मधुकरं। रमा ये ध्यायन्ति त्यजति न हि तेषां सुभवनम्।।

परः श्रीमातंग्या जयति हृदयाख्यस्सुमनसामयं सेव्यस्सद्योभिमत फलदश्चाति ललितः।

नरा ये श्रृण्वन्ति स्तवमपि पठन्तीममनिशं। न तेषां दुःप्राप्यं जगति यदलभ्यं दिविषदाम्।।

धनार्थी धनमाप्नोति दारार्थी सुन्दरीं प्रियाम्। सुतार्थी लभते पुत्रं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात्।।

विद्यार्थी लभते विद्यां विविधां विभवप्रदाम्। जयार्थी पठनादस्य जयं प्राप्नोति निश्चितम्।।

नष्टराज्यो लभेद्राज्यं सर्वसम्पत्समाश्रितम्। कुबेरसमसम्पत्तिः स भवेद्धृदयं पठन्।।

किमंत्र बहुनोक्तेन यद्यदिच्छति मानवः। मातंगीहृदयस्तोत्र पाठात्तत्सर्वमाप्नुयात्।।

इस पावन स्तोत्र का पाठ करने से निर्धन को धन, पुत्रहीन को पुत्र, विद्यार्थी को विद्या तथा नष्टराज्य की पुनः प्राप्ति होती है। सर्वकामनाओं की सिद्धि हेतु इसका पाठ करना चाहिये।

श्रीमातंगी अष्टोऽत्तरशतनामावलि- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमातंगी शतनाम्नां भगवान् मतंग ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमातंगीदेवता श्रीमातंगीप्रीतये जपे विनियोगः।

ध्यानम्- ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं श्रृण्वतीं श्यामलांगीं न्यस्तैकांघ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्। कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातंगीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

नामावलि- ॐ महामत्तमातंगिन्यै नमः। ॐ सिद्धिरूपायै नमः। ॐ योगिन्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ रमायै नमः। ॐ भवान्यै नमः। ॐ भयप्रीतिदायै नमः। ॐ भूतियुक्तायै नमः। ॐ भवाराधितायै नमः। ॐ भूतिसम्पत्कर्यै नमः।।10।। ॐ जनाधीशमात्रे नमः। ॐ धनागारदृष्ट्यै नमः। ॐ धनेशार्चितायै नमः। ॐ धीरवाप्यै नमः। ॐ वरांगयै नमः। ॐ प्रकृष्टायै नमः। ॐ प्रभारूपिण्यै नमः। ॐ कामरूपायै नमः। ॐ प्रहृष्टायै नमः। ॐ महाकीर्तिदायै नमः।।20।। ॐ कर्णनाल्यै नमः। ॐ काल्यै

नमः। ॐ भगायै नमः। ॐ घोररूपायै नमः। ॐ भगांगयै नमः। ॐ भगाह्वायै नमः। ॐ भगप्रीतिदायै नमः। ॐ भीमरूपायै नमः। ॐ भवान्यै नमः। ॐ महाकौशिक्यै नमः ।।30।। ॐ कोशपूर्णायै नमः। ॐ किशौर्यै नमः। ॐ किशोरप्रियायै नमः। ॐ नन्दईहायै नमः। ॐ महाकारणायै नमः। ॐ अकारणायै नमः। ॐ कर्मशीलायै नमः। ॐ कपाल्यै नमः। ॐ प्रसिद्धायै नमः। ॐ महासिद्धखण्डायै नमः ।।40।। ॐ मकारप्रियायै नमः। ॐ मानरूपायै नमः। ॐ महेश्यै नमः। ॐ महोल्लासिन्यै नमः। ॐ लास्यलीलालयांगयै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ क्षेमशीलायै नमः। ॐ क्षपाकारिण्यै नमः। ॐ अक्षयप्रीतिदायै नमः। ॐ भूतियुक्तायै नमः ।।50।। ॐ भवान्यै नमः। ॐ भवाराधितायै नमः। ॐ भूतिसत्यात्मिकायै नमः। ॐ प्रभोद्भासितायै नमः। ॐ भानुभास्वत्करायै नमः। ॐ धराधीशमात्रे नमः। ॐ धनागारदृष्ट्यै नमः। ॐ धनेशार्चितायै नमः। ॐ धीवरायै नमः। ॐ धीवरांगयै नमः ।।60।। ॐ प्रकृष्टायै नमः। ॐ प्रभारूपिण्यै नमः। ॐ प्राणरूपायै नमः। ॐ प्रकृष्टस्वरूपायै नमः। ॐ स्वरूपप्रियायै नमः। ॐ चलत्कुण्डलायै नमः। ॐ कामिन्यै नमः। ॐ कान्तयुक्तायै नमः। ॐ कपालायै नमः। ॐ अचलायै नमः ।।70।। ॐ कालकोद्धारिण्यै नमः। ॐ

कदम्बप्रियायै नमः। ॐ कोट्यै नमः। ॐ कोटदेहायै नमः। ॐ क्रमायै नमः। ॐ कीर्तिदायै नमः। ॐ कर्णरूपायै नमः। ॐ काक्ष्म्यै नमः। ॐ क्षमांगयै नमः। ॐ क्षयप्रेमरूपायै नमः॥80॥ ॐ क्षपायै नमः। ॐ क्षयाक्षायै नमः। ॐ क्षयाह्वायै नमः। ॐ क्षयप्रान्तरायै नमः। ॐ क्षवत्कामिन्यै नमः। ॐ क्षारिण्यै नमः। ॐ क्षीरपूषायै नमः। ॐ शिवांगयै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ शाकदेहायै नमः॥90॥ ॐ महाशाकयज्ञायै नमः। ॐ फलप्राशकायै नमः। ॐ शकाह्वायै नमः। ॐ अशकाह्वायै नमः। ॐ शकाख्यायै नमः। ॐ अशकायै नमः। ॐ शकाक्षान्तरोषायै नमः। ॐ सुरोषायै नमः। ॐ सुरेखायै नमः। ॐ महाशेषयज्ञोपवीतप्रियायै नमः॥100॥ ॐ जयन्त्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ जाग्रत्यै नमः। ॐ योग्यरूपायै नमः। ॐ जयांगायै नमः। ॐ जपध्यानसंतुष्टसंज्ञायै नमः। ॐ जयप्राणरूपायै नमः। ॐ जयस्वर्णदेहायै नमः। ॐ जयज्वालिन्यै नमः। ॐ यामिन्यै नमः॥110॥ ॐ याम्यरूपायै नमः। ॐ जगन्मातृरूपायै नमः। ॐ जगद्रक्षणायै नमः। ॐ स्वधावौषडन्तायै नमः। ॐ विलम्बाविलम्बायै नमः। ॐ षडंगायै नमः। ॐ महालम्बरूपायै नमः। ॐ असिहस्तायै नमः। ॐ पदाहारिण्यै नमः। ॐ हारिण्यै नमः॥120॥ ॐ महामंगलायै नमः। ॐ

मंगलप्रेमकीर्त्यै नमः। ॐ निशुम्भक्षिदायै नमः। ॐ शुम्भदर्पत्वहायै नमः। ॐ आनन्दबीजादिमुक्तस्वरूपायै नमः। ॐ चण्डमुण्डापदायै नमः। ॐ मुख्यचण्डायै नमः। ॐ प्रचण्डाप्रचण्डायै नमः। ॐ महाचण्डवेगायै नमः।।130।। ॐ चल्लच्चामरायै नमः। ॐ चामरायै नमः। ॐ चन्द्रकीर्त्यै नमः। ॐ सुचामीकरायै नमः। ॐ चित्रभूषोज्ज्वलांगयै नमः।।135।।

श्रीमातंगी सहस्रनाम स्तोत्रम्- श्रीमातंगी सहस्रनाम का नित्य पाठ करने से पूजा का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है एवं भगवती का सान्निध्य प्राप्त होता है। अतः अपने इष्टदेव की प्रसन्नता एवं शीघ्र कार्य सिद्धि हेतु सहस्रनाम का पाठ अन्त में अवश्य करना चाहिये। केवल इस सहस्रनाम के प्रभाव से ही मनुष्य सर्वसिद्धियों को अधिकारी हो सकता है। मातंगी सहस्रनाम की अत्याधिक प्रशंसा करते हुए ईश्वर देवि से कहते हैं- सुमुखी देवी के स्तोत्र का पाठ करने से वही पुण्य मिलता है जो पुष्कर आदि तीर्थों में स्नान करने से मिलता है। सहस्रनाम स्तोत्र का

पाठ करने वाला सर्वत्र विजयी होता है। सभा में या संग्राम में उसकी पराजय नहीं होती।

ईश्वर उवाच- श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं तत्त्वतः परमः। नाम्नां सहस्रं परमं सुमुख्याः सिद्धये हितम्।।

सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत्। पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे।।

यथा तुष्टा भवेद्देवी सुमुखी चास्य पाठतः। तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः।।

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः। सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्ना सुमुखी भवेत्।।

मातंगोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप् देवी समीरिता। सुमुखी विनियोगः स्यात्सर्वसंपत्तिहेतवे।।

ध्यानम्- देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां। श्यामांगीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुंजावली शोभिताम्।। हस्ताभ्यां दधतीं कपाललममलं तीक्ष्णं तथा कर्त्रिकां। ध्यायेन्मानसपंकजे भगवतीमुच्छिष्ट चाण्डालिनीम्।।

स्तोत्रम्- ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा। समानास्या साधनी च समस्त सुरसम्मुखी।1।

सर्वसम्पत्तिजननी सम्पदा सिंधुसेविनी। शम्भुसीमंतिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा।2।

सारंगासवलीवेला लावण्य वनमालिनी। वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी।3।

वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका। काली कालप्रिया केली कामला कालकामिनी।4।

कमला कमलस्था च कमलास्था कलावती। कुलीना कुटिला कांता कोकिला कलभाषिणी।5।

कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका। केशिनी च कशावर्ता कौशाम्भी केशवप्रिया।6।

काली काशी महाकाल संकाशा केशदायिनी। कुण्डला च कुलस्था च कुण्डलांगद मंडिता।7।

कुण्डपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीति वर्द्धिनी। कुण्डप्रिया कुण्डरुचिः कुरंग नयनाकुला।8।

कुन्दबिम्बालि नदिनी कुसुंभकुसुमाकरा। कांचीकनक शोभाढ्या क्वणत्किंकिणिकाकटिः।9।

कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कण्ठवत्यपि। कपर्द्दिनी कपटिनी कठिनी कलकण्डिनी।10।

कीरहस्ता कुमारी च कुरूढकुसुमप्रिया। कुंजरस्था कुंजरता कुंभी कुंभस्तनी कला।11।

कुम्भिकांगा करभोरूः कदली कुशशायिनी। कुपिता कोटरस्था च कंकाली कन्दलालया।12।

कपालवासिनी केशी कम्पान शिरोरुहा। कादम्बरी कदम्बस्था कुंकुम प्रेमधारिणी।13।

कुटुम्बिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया। कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी।14।

कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवन्दिता। कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी।15।

खंगिनी खेचरी खंजा खंजरीटेक्षणा खगा। खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया।16।

खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वांगधारिणी। खरखण्डिन्यपि ख्यातिः खण्डिता खण्डनप्रिया।17।

खण्डप्रिया खण्डखाद्या खण्डसिंधुश्च खण्डिनी। गंगा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती।18।

गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा। गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रीतिर्गुरुर्गिरी।19।

गौर्गौरी गण्डसदना गोकुला गोप्रतारिणी। गोप्ता गोविन्दिनी गूढा गूढ विग्रस्त गुंजिनी।20।

गजगा गोपिनी गोपी गोक्षा जयप्रिया गणा। गिरिभूपाल दुहिता गोगा गोकुलवासिनी।21।

घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घन निस्वना। घुंकारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता।22।

घण्टानादप्रिया घण्टा घोटा घोटकवाहिनी। घोररूपा च घोरा घृतप्रीतिर्घृतांजनी।23।

घृताची घृतवृष्टिश्च घण्टाघट घटावृता। घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी।24।

चंचरीकी चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी। चातुरी चपला चंचुश्चिता चिंतामणिस्थिता।25।

चातुर्वर्ण्यमयी चंचुश्चोराचार्य्या चमत्कृतिः। चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी चक्रमोदिनी।26।

चेतश्चरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया। चापिनी चम्पक प्रीतिश्चण्डा चण्डालवासिनी।27।

चिरंजीविनी तच्चिता चिंचामूल निवासिनी। छुरिका छत्रमध्यस्था छिन्दा छिन्दकरी छिदा।28।

छुच्छुन्दरी छलप्रीतिश्छुच्छुन्दरि निभस्वना। छलिनी छत्रदा छिन्ना छिण्टिच्छेदकरी छटा।29।

छद्मिनी छान्दसी छाया छरुच्छन्दकरीत्यपि। जयदा जयदा जाती जायिनी जामला जतुः।30।

जम्बूप्रिया जीवनस्था जंगमा जंगमप्रिया। जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः।31।

जगज्जंतु प्रधाना च जगज्जीवपरा जवा। जातिप्रिया जीवनस्था जीमूत सदृशीरुचिः।32।

जन्या जनहिता जाया जन्मभूर्ज्जंभसी जभूः। जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छ्रजित्।33।

जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना। जालन्धरमयी जानुर्जालौका जाप्यभूषणा।34।

जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनाप्रिया। जगती जननिरता जगच्छोभाकरी जवा।35।

जगतीत्राणकृज्जंघा जातीफल विनोदिनी। जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी।36।

जीमूतवाहन रुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत्। जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी।37।

जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी। जनापवादा जीवा च जननी गृहवासिनी।38।

जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत्। जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी।39।

जलमुक्ता जलारोहा जलसा जलजेक्षणा। जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा।40।

जलविस्फूर्जित वपुर्ज्वलत्पावक शोभिनी। झिंझा झिल्लमयी झिंझा झणत्कारकरी जया।41।

झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रास निवारिणी। टंकारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा।42।

टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिण्डीरवसनावृता। डाकिनी डामरी चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी।43।

डकारनिस्सव नरुचिस्तपिनी तापिनी तथा। तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तमः प्रिया।44।

ताम्रा ताम्रवती तंतुस्तुन्दिलातुल संभवा। तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया।45।

तुदनी तुननी तुम्बी तुलाकाला तुलाश्रवा। तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा।46।

तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुला कोटिनिनादिनी। ताम्रौष्ठा ताम्रपर्णी च तमःसंक्षोभकारिणी।47।

त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशीत मालिनी। तमोदानवती ताम्रतालस्थानवती तमी।48।

तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा। तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः।49।

तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा। तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुम्बनी।50।

स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूल सम्पद्विवर्द्धिनी। स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थपतिः स्थूलविग्रहा।51।

स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसंगविवर्द्धिनी। दण्डिनी दंतिनी दामा दरिद्रा दीनवत्सला।52।

देवी देववधूर्दित्या दामिनी देवभूषणा। दया दमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी।53।

देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणी देवतानता। दोलाक्रीडा दयालुश्च दम्पती देवतामयी।54।

दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी। दुर्गा दुर्गतिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी।55।

दुर्गन्धनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमनकारिणी। दुर्गन्धा दुन्दुभिध्वान्ता दूरस्था दूरवासिनी।56।

वरदा वरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी। धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी।57।

धीरारवा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा। धनुर्द्धरा च धमनी धमनीधूर्तविग्रहा।58।

धूम्रवर्णा धूम्रपाना धूमला धूममोदिनी। नन्दिनी नन्दिनी नन्दा नन्दिनी नन्दबालिका।59।

नवीना नर्मदा नर्मनेमिर्निय मनिस्वना। निर्मला निगमधारा निम्नगा नग्नकामिनी।60।

नीला निरत्ना निर्वाणा निर्लोभा निर्गुणा नतिः। नीलग्रीवा निरीहा च निरंजन जनानवा।61।

निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्नासा नासिकाभिधा। पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी।62।

पीना पीनस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी। परा परपरा काली पारकृत्य भुजप्रिया।63।

पवनस्था च पवना पवनप्रीति वर्द्धिनी। पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्द्धिनी।64।

पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी। पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः।65।

पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा। पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी।66।

पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिणी। पानदा पानपात्री च पानदान करोद्यता।67।

पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा। पतंगाभा पतंगा च पौनः पुन्यमिवापरा।68।

पंकिला पंकमग्ना च पानीया पंजरस्थिता। पंचमी पंचयज्ञा च पंचता पंचमप्रिया।69।

पिचुमन्दा पुण्डरीका पिकी पिंगललोचना। प्रियंगुमंजरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा।70।

प्रेतासना प्रियालस्था पाण्डुघ्नी पीनसापहा। फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा।71।

फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लाम्बुजानना। स्फुलिंगहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा।72।

बलमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी। वेणुवाद्या वनचरी विरिञ्चि जनयित्र्यपि।73।

विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी। बुद्धमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा।74।

वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा। विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा।75।

वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता। विद्यौघविह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा।76।

विरावा विवरीकारा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला। विंध्यस्था वरवंद्या च वीरस्थानवरा च वित्।77।

वेदान्तवेद्या विजया विजयी विजयप्रदा। विरोगिवन्दिनी वंध्या वंद्यबंधनिवारिणी।78।

भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी। भीमा भीमानना भीमा भंगुरा भीमदर्शना।79।

भिल्ली भिल्लधरा भीरुर्भरुण्डा भीर्भयावहा। भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया।80।

भगासना भगाभोगा भेरीझंकाररंजिता। भीषणा भीषणारावा भगवत्यहि भूषणा।81।

भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा। भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्भरदायिनी।82।

भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता। माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही।83।

महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया। मदोद्धता मतंगस्था माधवी मधुमर्द्दिनी।84।

मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता। मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनोद्यता।85।

मूर्द्धावती महामाया मायामहिम मन्दिरा। महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी।86।

महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरुमण्डिता। मेदस्विनी मिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्द्दिनी।87।

मण्डलस्था भगस्था च मदिरारागगर्विता। मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी।88।

मातंगिनी च मातंगी मातंगतनयापि च। मधुस्रवा मधुरसा बंधूककुसुमप्रिया।89।

यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता। यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्द्दिनी।90।

यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी। यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कम्पकारिणी।91।

यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी। यशस्सूत्रप्रदायामा यज्ञकर्मकरीत्यपि।92।

यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी। रंजिता राजपत्नी च रमा रेखारवीरणा।93।

रजोवती रजश्चित्रा रंजनी रजनीपतिः। रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्द्धिनी।94।

राजवंती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी। रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः।95।

रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी। रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्दया।96।

रामिका रजकी रेवा रजनी रंगलोचना। रक्तचर्मधरा रंगी रंगस्था रंगवाहिनी।97।

रमा रंभाफलप्रीति रंभोरू राघवप्रिया। रंगा रंगांगमधुरा रोदसी च महारवा।98।

रोगकृद्रोगहंत्री च रोगभृद्रोगस्राविणी। बन्दी बन्दिस्तुता बन्धुर्बन्धूककुसुमाधरा।99।

वंदिता वंद्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा। विकोपा विकपाला च विकस्था विंकवत्सला।100।

वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविंककरी विधा। शंखिनी शंखवलया शंखमालावती शमी।101।

शंखपात्राशिनी शंखस्वना शंखगला शशी। शबरी शांबरी शंभुः शंभुकेशा शरासिनी।102।

शवा श्येनवती श्यामा श्यामांगी श्यामलोचना। श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा।103।

शमदा शमहंत्री च शंखिनी शंखरोषणा। शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषाख्या शेषशायिनी।104।

शेमुषी शोषिणी शेषा शौर्य्या शौर्य्यशरा शरी। शापदा शापहा शापा शापपंथाः सदाशिवा।105।

भृगिणी भृगिपलभुक् शंकरी शांकरी शिवा। शवस्था शवभुक् शांता शवकर्णा शवोदरी।106।

शाविनी शवशिंशा श्रीः शवा च शवशायिनी। शवकुण्डलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना।107।

शवकांची शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः। स्रवंती संकुचा शक्तिः शंतनुः शवदायिनी।108।

सिंधुः सरस्वती सिंधुः सुन्दरी सुन्दरानना। साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती।109।

संततिः सम्पदा संविच्छंकिसम्पत्तिदायिनी। सपत्नी सरसा सारा सारस्वतकरी सुधा।110।

सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा। समधीः सामदा सीमा सम्मोहा समदर्शना।111।

सामतिः सामदा सीमा सावित्री सविधा सती। सवना सवनासारा सवरा सावरा समी।112।

सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी। हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलनिचोलयुक्।113।

हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा। हला हलवती ह्येषा हेला हर्षविवर्द्धिनी।114।

हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी। हंकारी हंकृतिर्हंका हीहीहाहाहिता हिता।115।

हीतिर्हेमप्रदा हारा राविणी हरिसम्मता। होरा होत्री होलिका च होमा होमहविर्हविः।116।

हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी। लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा।117।

लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता। ललामलोचना लोम्या लोलाक्षी सत्कुलालया।118।

लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललंतिका। लतिका लंघिनी लंघा लालिमा लघुमध्यमा।119।

लघीयसी लघूदर्य्या लूता लूताविनाशिनी। लोमशा लोमलम्बी च ललंती च लुलुम्पती।120।

लुलायस्था च लहरी लंकापुरपुरंदरा। लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदाऽलभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा।121।

क्षणा क्षणक्षुः क्षुत्क्षीणी क्षमा क्षांतिः क्षमावती। क्षमा क्षामोदरी क्षेम्या क्षोभभृत्क्षत्रियांगना।122।

क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा। क्षेमंकरी क्षयकरी क्षय कृत्क्षयदा क्षतिः।123।

क्षुद्रिकाऽक्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका। मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम्।124।

फलश्रुति– यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः। अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत्।125।

मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतो व्रजेत्। पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।126।

वंध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषः सदृशं गुरोः। सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहुदुग्धदाः।127।

राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः। अरयः संक्षयं यांति मनसा संस्मृता अपि।128।

दर्शनादेव जायंते नरा नार्य्योऽपि तद्वशाः। कर्ता हर्ता स्वयं वीरो जायते नात्र संशयः।129।

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्। दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन।130।

चतुष्पथेऽर्द्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः। एकाकी निर्भयो वीरो दशवारं स्तवोत्तमम्।131।

मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिद्ध्येन्न संशय। विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मंत्रं कदाचन।132।

न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि। कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा।133।

कृतकृत्यः स जायेत कर्ता हर्ता नृणामिह। रोगार्तोऽर्द्ध निशायां यः पठेदासन संस्थितः।134।

सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा। अर्द्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम्।135।

अष्टोत्तर सहस्रं तु दशवारं जपेत्ततः। सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा।136।

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी। ततो यदि न भीतिः स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत्।137।

तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णति चण्डिका। यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा।138।

रोचनागरुकस्तूरीकपूरैश्च सचन्दनैः। कुंकुमेन दिने श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके।139।

शुभनक्षत्रयोगे च कृतामारुतसत्क्रियः। कृत्वा सम्पातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे।140।

सहस्रनाम स्वर्णस्थं कण्ठे वां विजितेन्द्रियः। तदा यं प्रणमेन्मंत्री क्रुद्धः स म्रियते नरः।141।

दुष्टश्वापदजंतूनां न भीः कुत्रापि जायते। बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये।142।

मोहनस्तंभनाकर्षणमारणोच्चाटनानि च। यंत्रधारणतो नूनं जायंते साधकस्य तु।143।

नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तध्वजे स्थापयेद्यदि। तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डाप्यरिवाहिनी।144।

एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत्। तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः।145।

राजपत्न्योऽपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः। एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासेन स्यान्महाकविः।146।

पण्डितश्च महावादी जायते नात्र संशयः। अयुतं च पठेत्स्तोत्रं पुरश्चरणसिद्धये।147।

दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वाक्तैर्विधानतः। स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये।148।

मंत्रो निष्कील तामेति सुमुखी सुमुखी भवेत्। अनन्तं च भवेत्पुण्यंपुण्यं च क्षयं वज्रेत्।149।

पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत्। तत्फलं लभते जंतुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः।150।

एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने। न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि।151।

प्रकाशनादसिद्धिः स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत्। नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामिह।152।

वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां। सिन्दूरांकितमस्तकां मधुमदोल्लोलोच्चमुक्तावलीम्।153।

श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयंतीं शुकं। गुंजापुंजविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलताम्।।154।।

यह माता सुमुखी का सिद्धिदायक सहस्रनाम स्तोत्र है। जो नियम एवं सदाचार से नित्य इसका पाठ करता है, वह दरिद्र भी धनवान हो जाता है। यदि वह गूंगा है तो वह वाक्यपति बन जायेगा। यदि वह रोगी है तो वह निरोगी हो जायेगा। पुत्र की इच्छा वाला पुत्र को प्राप्त करता है। मातंगी साधक की वाणी प्रायः सत्य सिद्ध होती है। समस्त शत्रु विनष्ट हो जाते हैं। सिद्ध साधक के दर्शनमात्र से स्त्रियां और पुरुष उसके वश में हो जाते हैं। जो वीर पुरुष आधी रात्रि में चौराहे पर या निर्जन स्थान में निर्भय होकर इस स्तोत्र का दश बार पाठ करता है, उसका मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है। जो मनुष्य इस स्तोत्र के बिना मातंगी विद्या का जप करता है, वह निष्फल होता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana